REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

समकालिन भारतीय साहित्य में श्रमजीवि होटल गायिका की रचना : बारबाला

डॉ. एल. पी. लमाणी
हिन्दी विभाग , कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड.

प्रस्तावना :

महाराष्ट्र के मेहता प्रकाशन से सन २००८ में प्रकाशित मराठी आत्मकथन 'बारबाला' ने मराठी साहित्य के साथ समुचे भारतीय साहित्य में खलबली मचा दी। ब्राह्मण माता और दलित पिता की कोख से जन्मी बारबाला वैशाली हळदणकर की आत्मकथा वर्तमान समाज की शिष्ठता का पर्दाफाश कर, लोगों की विकृतियों को उजागर कराती है। भारतीय बारबाला युनियन की अध्यक्षा सुश्री वर्षा काले की प्रेरणा से एक बारगर्ल ने अपनी यौवनावस्था में खुद की भीषण आत्मकथा प्रस्तुत की, इस के हिंदी, अंग्रेजी तथा गुजराथी अनुवाद की मूलकृति की भाँति चर्चित रहे। साहित्य में अधिकतर 'वाह.....' छपती रही है किंतु एक शोषिता की 'आह.....' भी छपकर चर्चित हुई। वैशाली हळदणकर बचपन से लेकर यौवनावस्था तक अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों में धँसती रही। इन गहरी खाईयों में उसे धँसाने वालो की कमी नही रही। पारिवारिक सदस्यों के साथ-साथ समाज के शिष्ठ, अशिष्ठ, साधु-संतों ने भी वैशाली नामक बालिका को वेश्या की भाँति जीवन जीने पर मजबुर किया। समय और समाज के विकृत भीषण पाटों में उसकी कलावति प्रतिमा चुरचुर होती गई और 'भोग्या' का ही रूप उस से तीव्रता से उभरता रहा। बारबाला इसी कलावति और सामाजिक भोग्या की यथार्थ तसवीर है।

होटल गायिका की आह की अभिव्यक्ति –

'बारबाला' आत्मवृत्त में गायन कला से संबंधित अनेकानेक संदर्भ मिलते हैं। मूलतः वैशाली हळदणकर गायिका है, जो गायकी के घराणे से संबंधित है। वैशाली के माता-पिता शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ थे। इनके घर में गीत संगीत की पुश्तैनी परम्परा रही है। वैशाली के जन्मदाताओं ने अपने योगदान से संगीत कला को और भी उँचाई पर पहुँचने का कार्य किया। फलतः संगीत वैशाली की आत्मा में बसा है। दुर्भाग्य से वैशाली के परिवार में बचपन से ही पैसों की कमी, शारिरीक व्याधियों की उपस्थिति तथा जीवनोपयोगी चीजों का अभाव होने के कारण इनके जुगाड में माता-पिता चाहकर भी वैशाली की ओर अधिक ध्यान नहीं दे पाए। फलतः पडोसियों, परिचयों तथा समाज के ठेकदारों द्वारा वैशाली का बचपन से ही शोषण होता रहा। उसपर अन्याय अत्याचार होते रहे। बाल उम्र से ही वासना और विकारों के शिकंजे में वैशाली छटपटाती रही। उसकी पीड़ा एवं उसके आँसू उसकी आह बनकर रह गई। यही आह बारबाला के रूप में प्रकट हुई। बारबाला के मलपृष्ठ पर वैशाली ने बडी स्पष्ठता के साथ यह लिखा है कि यह उसकी 'आह' का प्रकाशन है। उसके साथ समाज ने सब कुछ किया। अब क्या होना

बाकी रह गया ? दो वक्त की रोटी जुटाने, माता-पिता की अभावग्रस्त स्थितियाँ दूर करने तथा बेटों का उदरनिर्वाह कराने के लिए वह एक कलाकार से नौकरानी, होटल गायिका तथा वेश्या के रूपों में अपने आप को वह मजबुरन ढालती रही। समाज उसे तोडने, मरोडने, भोगने के लिए नित्य उत्सुक रहता, मानो समाज को उस की गंध आती थी।

वैशाली की उपेक्षा की शुरूवात उसके जन्म से ही हुई है। इस संदर्भ में उन्होंने बडी स्पष्ठता से लिखा है, ''मेरा जन्म ०१ जुलाई १९६७ में हुआ। मेरे जन्म पर पिता नाराज थे। जब मेरे बाद मेरे छोटे भाई का जन्म हुआ तब पिता की नाराजगी तीव्रता से दिखाई देने लगी। जब मैं माँ के गर्भ में थी तब ही पिता मेरी माँ को त्यागना चाहते थे किंतु माँ को हिस्टेरिया का अॅटक आने का कारण यह उसे ठुकरा न सके। मेरे जन्म पर हॉस्पिटल में पिता जोर से कह उठे, यह छिनाल जन्मी और पुरे अस्पताल को सीर पर उठा लिया। भूखी इतनी की एक लिटर दुध पी गई तब कहा चुप रही।''(१)

वैशाली ने अपने जीवन की दूरावस्था तथा व्यक्तित्व की अधोगति के संदर्भ में अपने जन्मदाता तथा भाई को ही पूर्णतः जिम्मेदार ठहराया है। बडी ही भावुकता में उन्होंने लिखा है, ''यदि इन तीनों ने (माता, पिता, भाई) मुझे स्वीकारा होता तो मेरे जीवन की इतनी बरबादी नही हुई होती। मैं व्यसनों के अधिन नही हुई होती। अपने मार्ग से गुमराह नहीं हुई होती। छोटी-छोटी बातों के लिए तरसी नही होती। किंतु दुर्भाग्य से ऐसा नही हो सका। उनके लिए मैं कभी भी प्रिय या लाभदायी नही ठहर सकी।''(२)

'बारबाला' की उपेक्षित जिंदगी की राहे खोलते हुए वैशाली ने इस धंदे का कडवा सच प्रस्तुत करते लिखा है, ''होटल लाईन में जो लडकियाँ आती है उनके भडवे (दलाल) पति, भाई या पिता होते हैं। उन्हें बार की कमाई हथियानी होती है। इसलिए उस लडकी की चमडी की दमडी भी वे छोडना नही चाहते। ये घर के भडुवे बाहर के दलालों से थोडे अच्छे होते हैं। जो दलाल लडकियों को वेश्या व्यवसाय हेतु फॅसाकर या पकडाकर लाते हैं वे उनका हर तरिके से छल करते हैं। वेश्याओं को बिनधास्त धंदा तो भी करते आता किंतु बारबालाओं को वेश्याओं समान बर्ताव नहीं करते आता। बारबाला तो शराब के साथ ग्राहकों के सामने परोसी जाती। हमने ग्राहकों का मनोरंजन ही करना चाहिए। शराबियों को शराब भी पिलानी चाहिए और उपर से अन्य स्त्रियों की भांति सती-सावित्रि समान भी रहना चाहिए। अनेक बार मैं खुद को तो कभी भाग्य को दोष देने के अलावा कुछ भी नही कर सकती थी। मैं एक भीषण चक्रव्युह में घिर गई थी, जिस के साथ रोज लडने-झगडने का मैं पुरी ताकद के साथ प्रयास कर रही थी।''(३)

बारबाला के चक्रव्युह में घिरी वैशाली हळदणकर ने अनेकबार बारगर्ल की भाँति उसकी नरकीय यातनाओं से मुक्त होने के प्रयास किए किंतु पारिवारिक उत्तरदायित्वों के कारण जीवन के हर मोड पर वह बारबाला की मुहर के रूप में मजबुर प्रस्तुत होती रही। सामाजिक उपेक्षा, रंगरैलियाँ तथा भोगपिपासा की अमीट मुहरे नित्य उसे प्रताडित करती रही। उसके सहृदयी व्यक्तित्व का ध्वंस करती रही। जिन्होंने अत्याचार किए, वासनावश भोगा उनके संदर्भ वैशाली ने सप्रमाण प्रस्तुत किए हैं। उसे जिंदगी में संघर्ष के साथ परिवर्तन की अभिलाषा है। बिताए हुए बारबाला के जीवन पर भाष्य करते वैशाली कहती हैं, ''मैं एक मनोरंजन का साधन थी। एक बारबाला थी। अनेक बार जबाब देने की इच्छा होने पर भी मैं चुप बैठती। मेरे जैसी हजारों लडकियों की यह अवस्था है। किंतु यदि हमारा किसी ने सम्मान किया, हमारी भावनाओं का आदर किया और हमें भी इन्सा के रूप में जीवन जीने का अवसर दिया तो किसी भी क्षण, कितने भी ध्वंस के पश्चात हम बारबाला बदल सकती है।''(४)

जन्मदाताओं के साथ से ही जुडी हुई जातियता की पीड़ा –

बारबाला वैशाली हळदणकर एक ऐसे अभिशप्त कलाप्रेमी घराने की अदाकारा है जिसने जातियता के अनेक दंशों को सहन किया है। ब्राह्मण माता और शुद्र (निम्नवर्ग) पिता (चांडाल की कोख) से जन्मी वैशाली भारतीय जाति व्यवस्था की बली ठहरी है। हिंदु धर्म की जाति, धर्म संबंधि विकृत धारणाओं की सर्वाधिक बली लेखिका ठहरी। नाई पिता और ब्राह्मण माता का आंतरजातिय विवाह समाज परिवर्तन की सबसे बडी मिसाल ठहरनी चाहिए थी। किंतु परिचितों एवं समाज के ठेकेदारों के

कारण ऐसा नही हो सका। दोनों की प्रेमभावनाएँ जातिगत विषमता के कारण तु-तु, मैं-मैं होती रही। मनमुटाव होता रहा। ये अलगाव इतना तीव्र होता गया कि चित्रलेखा (वैशाली) नामक अबोध बालिका भी जन्मदाताओं के प्रेम वात्सल्य से उपेक्षित होती गई। अपने जन्मदाताओं के विवाह के संदर्भ में लेखिका कहती हैं, ''मेरे माता-पिता का आंतरजातिय प्रेमविवाह हुआ था। पिता दलित समुदाय के और माता देशस्थ ब्राह्मण थी। मॉ का मायका दादर में डिसिल्वा हाईस्कुल के आगे पालन सोजपाल बिल्डिंग में था तो पिता का घर सोजपाल बिल्डिंग के सामने इलम महल मंजिल में था। इस मंजिल में घर लेने के लिए पिता के परिवार को जाति छिपानी पडी। वे खुद की जाति नाई नही बताते। इसी न्युनगंड के कारण पिता ने मुझे स्कुल में भर्ति करते समय अपनी जाति मराठा बताई। बचपन में मैंने अनेक बार मेरे माता-पिता को जाति के कारण लडते-झगडते देखा। पिता मेरी मॉ को 'भठुरडेकी' तो मॉ मेरे पिता को 'शुद्र का' कहकर अपमानित करते। उस समय मुझे बडा अचरज होता। जातियता के कारण समाज में मेरे पिता अपमानित और उपेक्षित होते। इसलिए अंत में पिता ने अपने 'देवाडे' उपनाम को बदलकर 'दिवाडकर' कर लिया। उसके बाद वे बडे अभिमान से कहते लो, अब हो गया न मैं सारस्वत-ब्राह्मण।''(५)

वैशाली के दादा-दादी केश कर्तन एवं समाज का परम्परागत कार्य करते। मुंबई के ताजमहल होटल में दादा केश कर्तन करते। आगे चलकर वे फिल्म इंडस्ट्री में नायिकाओं की केशभुषा करने लगे। दादी भी सिने अभिनेत्रियों के घर के काम के साथ उनकी मसाज भी करती। दादा-दादी तथा पिता की जाति अनेकों को पता होने के कारण वैशाली भी बचपन से जातियता की शिकार हुई। लेखिका पर हुए मानसिक, शारिरिक अत्याचारों में जाति अहं ठहरी। भूख, गरिबी, निर्धनता, अभावग्रस्तता तथा मजबुरी से भी लेखिका का 'दलित की बेटी' होना उसके सर्वनाश के लिए सर्वाधिक जिम्मेदार ठहरा। साथ रहनेवाली सवर्ण लडकियों तथा स्त्रीयों की तुलना में निम्न जाति के कारण ही सर्वाधिक पीडा सही है, जिससे उसके उन्नयशिल व्यक्तित्व का नित्य दलन-दमन होता रहा। एक कलाप्रेमी, सहृदय युवती हाड-मांस का जिंदा कंकाल बनकर रह गयी।

वैशाली के कलाप्रेमी घराने की भीषण शोकांतिका -

चित्रलेखा (वैशाली) का परिवार परम्परागत कला और कौशल का उत्तराधिकारी रहा है। वैशाली के दादा-दादी के भी पूर्व से उन के घर में यह परम्परा चली आ रही थी। गायन, वादन, नर्तन, कर्तन, मसाज जैसे कला-कौशल्य के कार्य विशेषतः निम्न वर्गियों में विरासत के रूप में पाए जाते हैं। उदरनिर्वाह हेतु इस परिवार के सदस्यों ने इसी विरासत को अपनाकर जीवन निर्वाह की ठानी किंतु दुर्भाग्य से परिवार का बेडापार न हो सका। संकटों, संशयों, अभावों तथा भोगपिपासाओं भी भीषण लहरों में यह परिवार चक्नाचुर हो गया। एक सुशिल गायकी के घराने का भयावह अंत हो गया। अबोध बालिका चित्रलेखा समय और समाज में निर्दयी पाटों में पीस कर वेश्या-सा जीवन जीने पर मजबुर हो गई।

लेखिका के दादाजी अमरनाथ देवाडे शराब के अति सेवन के कारण परिवार को अनाथ कर गए। लेखिका के पिताजी बचपन में पॉच वर्ष की उम्र से विकलांगता की वजह से लुले-लंगडे हो गए। दादी भी शराब के अति सेवन से परिवार को बेसहारा कर गई। गायिका मॉ हिस्टोरिया बिमारी के कारण नित्य बिमार रहती। विकलांग पिता सुबह संगीत विद्यालय जाकर, दोपहर तथा संध्या में ट्युशन लेकर पारिवारिक जरूरतों को पुरा करते-करते त्रस्त होते। लेखिका की माता 'गायिका शकुंतला' ने मायके और ससुराल में खुब कष्ठ झेले। वह सात्विक एवं सत्यवादि होकर भी झगडों के कारण अपना मानसिक संतुलन पूर्णतः खो चुकी। फलतः एक दिन बेचैनी में उसने मुंबई रेल इलाके में आत्महत्या कर ली। उसके शरिर को ढेरसारी चिटियॉ लग गई। पोस्ट मार्टम हुआ। विपन्नावस्था में पिता उस के पहले ही चल बसे थे, जो बेटे लक्ष्मीकांत की गालियों और मारपीट से लहुलुहान थे। लेखिका का भाई पहले अहं फिर बाद में पागलपन में चुर हो कर, दरदर की ठोकरे खाता रहा। फलतः लेखिका का बचपन और यौवन रेगिस्तान के तप्त अभिशापित संदर्भ बन गए। माता, पिता, भाई, पति, सास, ससुर द्वारा लथाडी गई, परिचितों एवं पडोसियों द्वारा शोषित की गई वैशाली के दुखों की सीमा न रही। उसे

बारबाला बनाने या वेश्या-सी जिंदगी जीने पर ये ही स्थितियाँ जिम्मेदार ठहरी। पति का निधन, बच्चों एवं खुद के उदरनिर्वाह तथा आश्रय हेतु 'बार लाईन' में कार्यरत वैशाली मनुष्यों की भोगपिपासा, काम लालसा तथा शारिरीक संबंधों की विकृतियों की भट्टी में झुलसती रही। पडोसियों, रिश्तेदारों, परिचितों, बार संबंधि व्यक्तियों तथा रजनीश के संतों ने वैशाली की मजबुरी का फायदा उठाते, उसपर असह्य अत्याचार किए।

वैशाली ने बड़ी स्पष्ठता एवं वेदना के स्वरों में सगे पिता तथा पुत्र की वासनाओं का भी पर्दाफाश किया है, जो इस आत्मवृत्त को यथार्थ के उच्चतम स्तर पर पहुँचाता है।

राख से जन्म लेनेवाले फिनिक्स की भांति वैशाली का जीवन संघर्ष –

वैशाली हळदणकर जन्म से जवानी के लंबे समय तक अपने अस्तित्व के लिए तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति के लिए अथक प्रयत्न करती रही। पडोसियों के घर झाडू-पोछा लगाना, उनके छोटे-मोटे काम करना, इसके साथ ही पैसे, चाय और रोटी के लिए केलेवाला, चड्ढा बिल्डर, अशोक सूर्यवंशी, टारझन, अशोक, प्रो.सिंग, ओशो मंडली जैसे अनेकों की हवस की मजबुरन शिकार वैशाली होती रही। सभी ने उसके मादा रूप को खुब और बारबार भोगना चाहा। मरती क्या न् करती ? लोकोक्ति के अनुसार असह्य पीड़ा और अपमान पचाकर, स्त्रीत्व की राख से वैशाली फिनिक्स की भांति पूनः जन्म लेती रही। सेवाप्रेमी इस पारिचायिका को उसके परिचितों से ही सर्वाधिक प्रताडित किया, कलंकित किया।

लैंगिक विकृति की पहली शिकार वैशाली अपने काका से हुई। टी.व्ही. देखने के बहाने बुलाकर बचपन में भास्कर काका के उस पर पहला अत्याचार किया। अत्याचार का ये सिलसिला घर और बाहर निरंतर जारी रहा। जिसे अपना समझा उसने ही वैशाली पर अत्याचार कर, अपनी विकृति का परिचय किया। दो सौ से उपर बारों में काम करनेवाली, अनेकों ग्राहकों, परिचितों संग संभाषण करनेवाली वैशाली को अपने दामन में अत्याचार, बलात्कार एवं उपेक्षाओं के काटों के अलावा कुछ नही मिला। पाखंडी समाज ने उसे भोगकर उसके व्यक्तित्व की राख करने की ठानी थी। यहाँ तक कि खुद के सगे बेटे ने एक दिन उसपर बलात्कार कर डाला। इस संदर्भ में यह लिखती हैं, ''बबलु बहुत ही विचित्र हावभाव करता। उच्छृखल आचरण करता। एक दिन छब्बीस जुलाई को मेरे ही लडके ने मुझपर बलात्कार किया। बलात्कार कैसा.....? मैं ही उस के शरण गई थी। उस ने उस से पहले एक-दो बार भी ऐसा प्रयास किया था।''(६)

मराठी भाषी इस बारबाला के भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो रहे है, गुजराती, तमिल, कोंकणी संस्करण आ रहे हैं। हिंदी में प्रसिद्ध समीक्षक पद्मजा घोरपडे ने 'एक सिंगर की आप बीती' शीर्षक से इसका भावभिना अनुवाद किया है। वैशाली की मेहनत, लगन, श्रमवृत्ति तथा शोषण के संदर्भ में अनुवादक स्पष्ठतः कहती है, ''यह सिर्फ अकेली बारबाला की आप बीती नही है, उन हजारों अभागी लडकियों की दास्तान है, जिन्हें रोजी रोटी के लिए शोषण, दमन तथा यातनाओं का निरंतर शिकार होना पडता है। अपने स्वाभिमान और स्वायत्तता को तरह-तरह से कुचला जाता देख वे कभी शराब की ओर मुडती है तो कभी ड्रग्स की ओर।''(७)

आज वैशाली बुजुर्ग है, बार लाईन से दूर है। माता, पिता मर चुके हैं, भाई, बेटा पागल हो कर घर से निकल गए हैं। एक बेटा साथ लिए ओशो की शरण में 'माँ अम्मीरो' के रूप में वह नया जीवन जी रही हैं। मुक्त विश्वविद्यालय से बेटे के साथ स्नातक की पदवी ग्रहण की है। निश्चित ही वैशाली बारबाला का व्यक्तित्व फिनिक्स की भांति नित्य संघर्षमय है। नारी अस्तित्व एवं साहस की यह अनूठी मिसाल है, जो भारत के बाहर भी अनेक पत्र-पत्रिकाओं में चर्चित है।

निष्कर्ष –

मराठी युवती की मर्मांतक जीवन पीड़ा की सघन अभिव्यक्ति 'बारबाला'। वर्तमान युग के अभिशापित कलाकार घराने की सक्षम गायिका 'वैशाली'। माता-पिता के आंतरजातिय विवाह, अभाव, गरिबी और उपेक्षा की बली 'वैशाली'। वैशाली के बचपन से ही शारिरिक एवं मानसिक अत्याचारों का

प्रारंभ। जन्मदाता की अनास्था एवं परिचितों की वासनाओं में छटपटाती वैशाली की जीवन कहानी। वैशाली मूलतः सहृदय, सौंदर्यप्रेमी, सेवाभावी एवं स्वाभिमानी युवती। ब्राह्मण और नाई माता-पिता की सर्वस्व खो चुकी संघर्षमयी नायिका 'वैशाली'। वैशाली की आत्माभिव्यक्ति में वेदना, करूणा एवं संघर्ष का अनोखा समन्वय। हळदणकर के आत्मवृत्त से जातियता, सामाजिक मनोरूग्णता एवं कामलालसा का पर्दाफाश। बारबाला वैशाली का जीवन भी, राख से पूनर्जिवित होनेवाले फिनिक्स की भांति अद्भुत।

संदर्भ –

१) पृष्ठसंख्या ००१, बारबाला – वैशाली हळदणकर (मेहता प्रकाशन, पूणे, संस्करण २००८)
२) पृष्ठसंख्या १६५, बारबाला – वैशाली हळदणकर (मेहता प्रकाशन, पूणे, संस्करण २००८)
३) पृष्ठसंख्या १७२, बारबाला – वैशाली हळदणकर (मेहता प्रकाशन, पूणे, संस्करण २००८)
४) पृष्ठसंख्या २३५, बारबाला – वैशाली हळदणकर (मेहता प्रकाशन, पूणे, संस्करण २००८)
५) पृष्ठसंख्या ००१, बारबाला – वैशाली हळदणकर (मेहता प्रकाशन, पूणे, संस्करण २००८)
६) पृष्ठसंख्या २३०, बारबाला – वैशाली हळदणकर (मेहता प्रकाशन, पूणे, संस्करण २००८)
७) पृष्ठसंख्या ००१, एक बार सिंगर की आप बीती (बारबाला), अनुवादक-पद्मजा घोरपडे, (वाणी प्रकाशन, संस्करण २००६)